भारत में बौद्ध धर्म के उन्नति एवं प्रगति के लिए विभिन्न दशाओं का एक ऐतिहासिक अध्ययन

(छठी शताब्दी ई0 पू0 से मौर्य काल तक)

शोध सार

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग

सामाजिक विज्ञान संकाय

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद।

शोध निदेशकः

डॉ0 सुरेन्द्र कुमार

सहायक प्राध्यापक,

विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग,

सिंदरी महाविद्यालय सिंदरी

धनबाद (झारखंड)

शोधार्थीः

रंजू कुमारी

स्नातकोत्तर इतिहास विभाग,

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल

विश्वविद्यालय, धनबाद (झारखंड)

भारत में बौद्ध धर्म के उन्नति एवं प्रगति के लिए विभिन्न दशाओं का एक ऐतिहासिक अध्ययन (छठी शताब्दी ई0 पू0 से मौर्य काल तक)

भूमिका (Introduction) :

भारत चीरकाल से ही धर्म प्रधान देश रहा है और इस प्रस्तावित शोध प्रबंध के भारत में बौद्धधर्म के उन्नति एवं प्रगति के विभिन्न दशाओं का एक ऐतिहासिक अध्ययन किया जाएगा। उत्तर वैदिक काल के पश्चात भारत में अनेक धर्मो का सूत्रपात हुआ. लेकिन, उसमें सबसे सर्वश्रेष्ठ धर्म में बौद्ध धर्म था। भारत खण्ड बौद्ध धर्म का जन्म भूमि देश है। बौद्धधर्म के बारे में जानकारियॉ हमें विभिन्न स्त्रोतो से मिलती है. जैसे पालीग्रंथ ललित विस्तार, महावग्ग, महावंश, दीपवंश तथा जातक कथाओं आदि। भारत में बौद्ध धर्म के उन्नति एवं प्रगति के लिए गौतम बुद्ध ने अपने धर्म का फैलाव पाली भाषा में किये जो कि एक बहुत सरल एवं जन की भाषा थी। जिसे सरलता से समझा जा सकता था, इससे पूर्व संस्कृत भाषा में उपदेश दिए जाते थे, जो कि आम जनमानस इस भाषा को समझने में सक्षम नहीं थे (शर्मा, 2018, 131) 1। गौतम बुद्ध प्राचीन धर्म में व्याप्त बुराईयों को दूर करने के पक्षधर थे। बुद्ध इस मत को स्वीकार करते थे कि वे नये धर्म की स्थापना नहीं करना चाहते थे, बल्कि वैदिक कालीन धर्म में सुधार कर के उन्हें पुनः स्थापित करना चाहते थे (मितल, 2006, 65) 2।

बौद्ध धर्म में यज्ञो, कर्मकाण्डो तथा अंधविश्वासों को कोई महत्व नहीं दिया गया था, बल्कि उनका धर्म सरल एवं सादगी पूर्ण था (मजूमदार, 2019, 136) 3। महात्मा बुद्ध देवताओं एवं देवियों के वजुद को नहीं मानते थे, बुद्ध अपने उपदेशों में कहते थे कि इस संसार की रचना दैवीय शक्ति से नहीं हुई हैं और न ही दैवीय शक्ति का कोई अस्तित्व हैं (सिन्हा, 1993, 94)4। पाली किताबो के सदृश्य बौद्ध धर्म के महत्वपूर्ण पुस्तक पिटक है, इसकी संख्या तीन है। सूतपिटक, अभिधम्म पिटक एवं विनय पिटक। सूतपिटक सबसे बड़ा हैं, इसमें बौद्ध धर्म के विषय में शैक्षणिक के बारे में ज्ञान उपलब्ध होती हैं, और इसमें कथा भी विद्ममान हैं (शर्मा, 2007, 37) 5। बौद्ध धर्म को अंगीकार आत्मसात् करने वाले भिक्षु एवं

उपासक कहे जाते थे। भिक्षु गृहस्थ जीवन का छोड़कर बौद्ध धर्म ग्रहण करते थे, जबकि उपासक दामपत्य (वैवाहिक) जीवन निर्वाह करते हुए बौद्ध धर्म में बने रखते थे (चौधरी, 2019, 106) 6।

भारत में बौद्ध धर्म के उन्नति एवं प्रगति के लिए विभिन्न दशाओं का अध्ययन कर के इस शोध प्रबंध में राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक तथा सामाजिक व्यवस्थाओं के बारे में महत्वपूर्ण तथ्यों के विषय में अमूल्य आत्मज्ञान प्राप्त करने की कोशिश होगी तथा वैदिक धर्म से अपमानित जनमानस को सम्मान पाने का एक अवसर प्राप्त होगा। साथ ही, ली गई समस्या के समुचित विश्लेषण के लिए छठी शताब्दी ई0 पू0 से लेकर मौर्य कालीन तक के बौद्ध धर्म की दशा का अवलोकन करना यथोचित होगा।

शोध समस्या का वृतांत (Statement of the problem) :

- बौद्ध धर्म 2600 वर्ष पुराना हैं। उत्तर वैदिक काल में शिक्षा एकांत स्थान में गुरू के माध्यम से दिया जाता था. इस तरह की शिक्षा संस्कृत में कंठग्र किया जाता था तथा इस शिक्षा को केवल राज परिवार के लोग ही ग्रहण कर पाते थे। इस प्रथा से आम लोग क्षुब्द हो गए। शैक्षणिक असमानता की इन दशाओं ने किस तरह से बौद्ध धर्म के उन्नति को आवश्यक बना दिया। इस संबंध में शोध की आवश्यकता हैं।
- भारत में उत्तर वैदिक काल के अंतिम समय में रूढ़ीवादी, अनुष्ठान तथा पूजा पाठ में अत्यधिक धन की आवश्यकता पड़ती थी. जो आम लोग इस को करने में सक्षम नहीं थे। उस काल की इन आर्थिक दशाओं में बौद्ध धर्म के उन्नति में कैसे सहायता पहुचाई इस संबंध में शोध की आवश्यकता हैं।
- भारत में उत्तर वैदिक काल के समय छुआछूत, जाति प्रथा ऊँच नीच तथा कठोर दण्ड नीतियों के कारण आम जन समुदाय में लोगों के बीच हीन भावना उत्पन्न हो गई। इस सामाजिक भेदभाव ने किस प्रकार से बौद्ध धर्म के उन्नति के लिए राह आसान किये इससे संबंधित शोध की आवश्यकता हैं।

- भारत में उत्तर वैदिक काल के समय से ही प्रशासन में ब्राहम्णों का राजनीति में वर्चस्व स्थापित था। वह प्रशासन में राजपुरोहित के हैसियत से पद पर आसीन थे, जिस से क्षत्रियों को अपने जिम्मेदारियों का पालन करने में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था। इसलिए ब्राहम्णों का वर्चस्व समाप्त करने के लिए शासक वर्ग ने बौद्ध धर्म को फैलाना एवं प्रश्रय देना शुरू कर दिये। आखिर वे कौन सी दशा थी जिसने ऐसा करने पर मजबूर कर दिया. इससे संबंधित शोध की आवश्यकता हैं।

विषय विवरण (State-of-the-art) :

- (पाण्डे, 2014, 201) लोहे के उपकरणों के कारण कृषि करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। खेती करने के लिए पशुओं की अधिक मात्रा में आवश्यकता पड़ती थी, जबकि वैदिक समय पशु बलि प्रथा होने के कारण बहुत सारे पशुओं की हत्या की जाती थी। इसी कारण आम जन मानस बौद्ध धर्म को अपना समर्थन दिये।[7]
- (सिंह, 2017, 828) जाति–व्यवस्था के बारे में ब्राहम्ण तथा बौद्ध धर्म का मंतव्यः में एक सबसे बड़ा अंतर यह था कि बौद्ध इसे इंसानों द्वारा निर्मित संस्था के रूप में देखते थे, जबकि ब्राहम्णों के लिए इसे दैवीय निर्मित संस्था के रूप में देखते थे।[8]
- (सिंह, 2018, 154) बौद्ध धर्म में वैदिक कानून–व्यवस्था को स्वीकार नहीं किये तथा सामान्य जनमानस को बिना जाति धर्म के भेद–भाव किये हुए अपने धर्म में दक्षित किये।[9]
- (झा, 2001, 140) बौद्ध धर्म में विनिमथ के रूप में आहत मुद्राओं का उपयोग होने लगा, जिसके परिणामस्वरूप व्यापार एवं वाणिज्य को बढ़ावा मिला। कबायली जीवन की मान्यताएँ कृषि तथा व्यापार में क्रांतिकारी परिवर्तन के कारण समाप्त होने लगी।
- (मिश्र, 2008, 108) गौतम बुद्ध वैदिक काल के नस्लिय व्यवस्था का विरोध किये, छुआ–छुत, ऊँच–निच तथा जाति प्रथा का भरपूर विरोध किये, लेकिन वर्ण–व्यवस्था में पहले स्थान पर ब्राहम्ण तथा दूसरे स्थान पर

क्षत्रिय, तीसरे स्थान पर व्यापारिक वर्ग और अंत में शुद्रों को वर्ण–व्यवस्था में स्वीकार किया गया था।[11]

- (राय, 1989 95) महात्मा बुद्ध का व्यक्तित्व बहुत ही आर्कषक था वे विद्ववान, तपस्वी एवं चिंतनशील व्यक्ति थे। उनका मन संसार के समस्त प्राणियों के दु:खों के लिए संवेदना से भरा हुआ था। उन्होंने अपनी मधुर वाणी से सरल जीवन से सभी लोगों के लिए मुक्ति का रास्ता खोल दिये थे।[12]
- (सिन्हा, 2017, 85) महात्मा बुद्ध ने ब्राहम्णों को जन्मजात न होकर अपने कर्तव्यों से होता हैं। ब्राहम्ण खुद को नित दिन रूझान करने के कारण अपने आपको पवित्र माना, लेकिन महात्मा बुद्ध इस तथ्य को नकार दिये, उनका कहना था कि अगर प्रतिदिन स्नान करने से पवित्र माना जाता है तो मीन तो हमेशा जल में ही रहती है तो उनका जीवन भी सुखमय होता।[13]

समस्या अन्वेषण (Problem to be investigated) :

- वैदिक काल में शैक्षणिक असमानता विराजमान थी। उस गढ़ी में शैक्षणिक दृष्टिकोण से कुछ वर्गो के लोगों की स्थिति संतोषजनक नहीं थी। शिक्षा से उपेक्षित वर्गो के लिए समानतावादी बौद्ध धर्म अंधकारमय जीवन में प्रभा के समान थी। बौद्ध धर्म ने कैसे शैक्षणिक असमानता को दूर करने में भूमिका निभाई। इसको अध्ययन करने की जरूरत हैं।
- वैदिक काल में आर्थिक दृष्टिकोण से सभी वर्ग एक समान नहीं थे और इस समय के अनुष्ठानिक कर्मकाण्ड काफी खर्चिली थी, जिसे सारे वर्गो के लिए इसको पूरा करना संभव नहीं था। जो लोग आर्थिक रूप से कमजोर थे, वो इससे क्षुब्द हो गए थे। बौद्ध धर्म इस समय एक सही रास्ता दिखाने वाला के रूप में सामने आया। बौद्ध धर्म ने किस तरिके से आर्थिक असमानता को दूर करने में भूमिका निभाई, इसको अध्ययन करने की आवश्यकता हैं।
- वैदिक समय में सामाजिक असमानता थी। समाज में कुछ वर्गो की स्थिति संतोष जनक नहीं थी। समाज में अपेक्षित वर्ग के लिए समनातावादी बौद्ध

धर्म अंधेरे में प्रकाश के जैसा था। बौद्ध धर्म ने किस तरिके से सामाजिक भेद–भाव को दूर करने में योगदान दिया। इसको अध्ययन करने की जरूरत हैं।

- वैदिक काल में राजनैतिक दशा सभी वर्गो के लिए एक जैसी नहीं थी। प्रशासन में सबसे उच्च वर्ग को सर्वश्रेष्ठ पदो से सुशोभित किया गया था, जिससे राजा का एकाधिकार समाप्त हो चुका था। उनके लिए गौतम के द्वारा बनाया गया बौद्ध धर्म एक बेहतरीन अवसर की भांति था, जिसका फायदा उस समय के प्रशासको ने उठाया। बौद्ध धर्म ने कैसे राजनीतिक असमानता को दूर करने में भूमिका निभाई, इसको अध्ययन करने की आवश्यकता हैं।

शोध के उद्देश्य (Objectives of Research) :

- भारत वर्ष में बौद्ध धर्म के उन्नति एवं प्रगति की शैक्षणिक दशाओं का अध्ययन करना।
- भारत वर्ष में बौद्ध धर्म के उन्नति एवं प्रगति की आर्थिक दशाओं का अध्ययन करना।
- भारत में बौद्ध धर्म के उन्नति एवं प्रगति की सामाजिक दशाओं का अध्ययन करना।
- भारत में बौद्ध धर्म के उन्नति एवं प्रगति की राजनीतिक दशाओं का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न (Research Questions) :

- भारत वर्ष में बौद्ध धर्म का उन्नति एवं प्रगति कौन–कौन सी शैक्षणिक दशाओं में हुआ?
- भारत वर्ष में बौद्ध धर्म का उन्नति एवं प्रगति कौन–कौन सी आर्थिक दशाओं में हुआ?
- भारत वर्ष में बौद्ध धर्म का उन्नति एवं प्रगति कौन–कौन सी सामाजिक दशाओं में हुआ?

- भारत वर्ष में बौद्ध धर्म का उन्नति एवं प्रगति कौन–कौन सी राजनीतिक दशाओं में हुआ?

शोध प्रविधि एवं रूपरेखा (Research Design & Methodology) :

इस शोध कार्य के दौरान यथा संभव ऐतिहासिक, वर्णनात्मक, तुलनात्मक, तथा विश्लेषणात्मक विधियों का उपयोग किया जाएगा, क्योंकि लिए गए शोध के विषय के लिए उपरोक्त विधियॉ सहायक हो सकती हैं, जिनकी सहायता से शोध कार्य कुशलता पूर्वक संपूर्ण हो सकेगा।

प्रस्तावित शोध प्रबंध के अध्ययन की सुविधाओं के लिए निम्नकिंत अध्यायों में विभाजित किया जाएगा।

	भूमिका।
प्रथम अध्याय	बौद्ध धर्म और शिक्षा
द्वितीय अध्याय	बौद्धधर्म के अभ्युदय में आर्थिक दशाओं
तृतीय अध्याय	बौद्ध धर्म का तत्कालिक समाज
चतुर्थ अध्याय	बौद्ध धर्म और शासक वर्ग
	उपसंहार
	ग्रंथ सूची

उपरोक्त समस्त अध्यायों का वर्णन, विश्लेषण तथा मूल्यांकन सर्वमान्य तथ्यों के आधार पर किया जाएगा।

भारत में बौद्ध धर्म के उन्नति एवं प्रगति के विभिन्न दशाओं का एक ऐतिहासिक अध्ययन (छठी शातब्दी ई0 पू0 से मौर्य काल तक) की व्याख्या की गई है। भारत में कैसे बौद्ध धर्म का उन्नति एवं प्रगति के विभिन्न दशाओ ने अपनी भूमिका निभाई इसे दर्शाने की यत्न की गई है।

भारत वर्ष में बौद्ध धर्म के उन्नति एवं प्रगति के विभिन्न दशाओं ने कैसे–कैसे प्रभावित किया, जिसके फलस्वरूप उनके राजनीतिक सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक क्षेत्र पर कैसा प्रभाव पड़ा, उसका इस शोध के अध्ययन से अध्ययन करने का प्रयास किया जाएगा।

डाटा संग्रहण एवं विश्लेशण में उपकरणों का उपयोग (Tools to be used in the collection of data and analysis) :

भारत में बौद्ध धर्म के उन्नति एवं प्रगति के लिए विभिन्न दशाओं का यथार्थ विधियों का उपयोग किया जाएगा। धर्म को जानने के लिए बौद्ध विहारों, मठो, चौत्यों, अभिलेखागारों, पाण्डुलिपियों, साक्षात्कार तथा खुद से बनाई गई प्रश्नवालियों का उपयोग किया जाएगा।
भारत में बौद्ध धर्म के उन्नति एवं प्रगति के दशाओं से संबंधित पुस्तको का प्रयोग किया जाएगा प्रदेशिक पुस्तकालय खूदाबक्श पुस्तकालय पटना, राज्य पुस्तकालय रॉची, जनजातीय शोध संस्थान रॉची, केन्द्र पुस्तकालय मोरहाबादी रॉची तथा अल्बर्ट पुस्तकालय रॉची तथा भारतीय पुस्तकालय का उपयोग किया जाएगा। पत्रिका, शोधपत्रिका, आर्टिकल्स, इन्टरनेट, मोबाइल, फोटो कैमरा, टेपरिर्कोडर तथा कम्प्यूटर का भी उपयोग किया जाएगा।

प्रस्तावित कार्य का महत्व (Significance of Proposed Works) :

तत्कालीन परिपेक्ष में बौद्ध धर्म की उपस्थिति भारतीय समाज में नगण्य हैं, तथा अन्य धर्मो के समाज बाहरी आडम्बर नहीं होने के कारण आम जनमानस इससे दूर हैं। आधुनिक काल में वैदिक कालिन धर्म के बदले में बौद्ध धर्म को बढ़ावा देना सामाजिक भावना के अनुरूप होगा तथा जनहित की भावना को ध्यान में रखते हुए, इसमें खुले द्वार की नीति अपनाने की आवश्यकता हैं। इस धर्म में वर्ण व्यवस्था को कोई महत्व नहीं दिया गया हैं। बौद्ध धर्म की अच्छाईयों का पता चलेगा और भारतीय समाज में भाई चारा और एकता की भावना बढ़ेगी।

इस प्रस्तावित शोध अध्ययन के माध्यम से भारत में उत्तर वैदिक काल के पश्चात से चली आ रही बौद्ध धर्म में आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र पर संबंधित ज्ञान उपलब्ध होगी जो वर्तमान समय में काफी प्रशांगिक हैं तथा लोक कल्याणकारी कार्यो को विचार में रखते हुए वैदिक तथा बौद्ध धर्म के मध्य तालमेल स्थापित करने की पहल होगी।

समकालीन ज्ञान में योगदान (Contribution to the existing Knowledge) :

प्रस्तावित शोध के माध्यम से भारत में शाक्यमूनि बुद्ध के द्वारा स्थापित धर्म के बारे में अभी तक जिन दशाओं का ज्ञान हैं, उसमें एक नवीन तथ्य सामने आ सकता है जो ऐतिहासिक पुन निर्माण के साथ साथ शिक्षको, विद्ववानों तथा विद्यार्थियों के अमुल्य ज्ञान के क्षेत्र में पथ प्रदर्शक का निर्माण करेगा। बहुत सारे नये तथ्य इसे शोध से उभर कर सामने आ सकते हैं, जिससे पूर्वाग्रह में बदलाव आएगा। यह शोध समाज के रचना की दिशा में नवीन बिन्दु का सदृश होगा।

भविष्य के कार्य (Future Works) :

इस प्रस्तावित शोध प्रबंध की एक निर्धारित रूप–रेखा होगी जो बौद्ध धर्म के अनुसंधान कार्य से संबंधित होगा। जिसके कारण इन विषयों पर शोधार्थियों को भविष्य में नये शोध करने का मार्ग प्रशस्त करेगा। आगे कुछ नये ऐतिहासिक निबंध आदि लिखे जायेगें और उसका प्रकाशन किया जाएगा। इस शोध प्रबंध का काम–काज बौद्ध धर्म का भारत में उन्नति को दर्शाने का होगा। इस शोध कार्य पर सेमिनार का आयोजन करके विद्यार्थियों का ज्ञानवर्धन किया जा सकेगा। भविष्य में इसे किताब का रूप देकर बौद्ध धर्म के अच्छाईयों से समाज को अवगत कराया जा सकता हैं तथा इस विषय पर शोध पत्रों का प्रकाशन कराने पर जोर दिया जाएगा।

<u>संदर्भ–सूची (Represent)</u> :

1. शर्मा, राम शरण, *''भारत का प्राचीन इतिहास''* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ संख्या–132
2. मित्तल ए.के. *''भारत का इतिहास'',* साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा, 2006, पृष्ठ संख्या–65
3. मजूमदार, रमेशचन्द्र, *''प्राचीन भारत''* मोतीलाल बनारसीदसास, दिल्ली, 2019, पृष्ठ संख्या–136
4. सिन्हा, विपिन बिहारी, *''प्राचीन भारत का इतिहास'',* अनुपम प्रकाशन, पटना, 1993, पृष्ठ संख्या–94
5. शर्मा, रामशरण, *''प्रारंभिक भारत का आर्थिक और सामाजिक इतिहास'',* हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली, 2011, पृष्ठ संख्या–37
6. चौधरी, राधाकृष्ण, *''प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास'',* भारती भवन, पटना, 2019, पृष्ठ संख्या–106
7. पाण्डे, एस.के. *''प्राचीन भारत'',* प्रयाग एकेडमी पब्लिकेशन, इलाहाबाद, 2014, पृष्ठ संख्या–201
8. सिंह, उपिन्दर, *''प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास'',* पिर्यसन, दिल्ली, 2019, पृष्ठ संख्या–328
9. प्रजापत, पप्पू सिंह, *''प्राचीन भारत का नवीन सर्वेक्षण'',* रॉयल पब्लिकेशन, जोधपुर, 2018, पृष्ठ संख्या–154
10. श्रीमाली, कृष्ण मोहन, *''प्राचीन भारत का इतिहास''* अभिनव प्रिन्टस, नई दिल्ली, 2001, पृष्ठ संख्या–140
11. मिश्र, वातात्मज, *''प्राचीन भारत का नवीन मूल्यांकन'',* टाटा हिल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008, पृष्ठ संख्या–108
12. राय, कौलेश्वर, *''प्राचीन भारत'',* के.एन. एजेन्सीज प्राईवेट लि0, नई दिल्ली, 1989, पृष्ठ संख्या–95
13. सिन्हा, हरेन्द्र प्रसाद, *''धर्म दर्शन की रूप–रेखा'',* मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 2017, पृष्ठ संख्या–85